एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

# फड़का का जीवन चक्र

(*आयुष कुमार शर्मा, अनिल यादव एवं नरेंद्र चौधरी)
राजा बलवंत सिंह कॉलेज, बिचपुरी, आगरा-283105, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: meaks0708@gmail.com

फड़का खरीफ फसलों जैसे ज्वार, मक्का एंव बाजरा का एक अत्यन्त हानिकारक कीट है, इससे फसलों को काफी नुकसान होने की संभावना रहती है। यदि प्रारम्भ में ही सतर्क रहकर कीट नियंत्रण के उपाय कर लिये जायें तो खरीफ फसलों को होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। यह सर्वभक्षी कीट की श्रेणी में आता है।

**कीट द्वारा फसलों को नुकसान**

कीट का प्रकोप मानसून की वर्षा के 15 से 20 दिन बाद शुरू होता है। और अक्टुम्बर माह तक रहता है। इसके शिशु एवं प्रौढ़ फसलों की पत्तियों , फुलों भुट्टों के दानों को खाकर सम्पूर्ण फसल को नष्ट करने की क्षमता रखते है। अत्यधिक प्रकोप की स्थिति में पौधों के केवल तने ही खेतों में खडें रह जाते है। फड़का कीट के प्रकोप को आसानी से देखा जा सकता है। पहले ये पत्तियों को किनारों से खाना आरम्भ करते है और उन्हे नुकसान पहुंचाते है। निम्फ और प्रौढ दोनों ही समान प्रकार का नुकसान पहुंचाते है। फसल को सर्वाधिक हानि कीट की प्रौढ अवस्था द्वारा होती है। प्रौढ पौधों की पत्तियां खाकर फसल को सीधा नुकसान पहुंचाते ह। साथ ही बचे भागों में ये मल त्याग देते है जो सड जाता है औश्र उस पर फफूंद पैदा हो जाती है। जो पशुओ को खाने योग्य भी नही रहता है।

- गर्मियों में मिट्टी पलटने वाले हल से खेतों की गहरी जुताई करें जिससे भूमि में पड़े अण्डपिण्ड तेज धुप लगने से स्वत ही नष्ट हो जाते है। एवं पक्षियों द्वारा खा लिये जाते है।
- फडका मादा अण्डपिण्ड प्राय पालियों या सिंचाई धोरों मे ही रखती है अत खेती की पालियां छोटी रखी जाये जिससे की वह सीमित भूमि में ही अण्डपिण्ड रख सकें । जैसे ही मानसून की शुरूआत हो तब खेतों मे पालियों की 15 से.मी. गहराई तक खुदाई कर उनका पुर्ननिर्माण करना चाहिए।
- मक्का फसल के खेत के चारों और 2–3 उमरे ज्वार के निकाल दिये जायें तो प्रकोप की स्थिति में ये कीट ज्यादा संख्या में ज्वार की पत्तियों में ही रहेगा क्योंकि ज्वार इसका प्रिय भोजन है। अत मात्र ज्वार पर कीटनाशी भुरकाव से इसे नष्ट किया जा सकत ाहै।
- टीन के चारो और सोरा, कोलतार जैसे चिपकने वाले पदार्थ लगाकर पालियों व खेतों में घुमाने से उस पर प्रारम्भिक अवस्था के कीट चिपक जाते है जिन्हे बाद में एकत्रित कर नष्ट कर देवं।
- कीट के पतंगो को प्रकाश की ओर आकर्षित करने हेतु खेत की मेड़ों पर एवं खेतों में गैस लालटेन या बिजली का बल्ब जलावें तथा उसके नीचे मिट्टी के तेल मिले पानी की परात रखें ताकि रोशनी पर आकर्षित कीट मिट्टी के तेल मिले पानी में गिरकर नष्ट हो जायें। यह प्रक्रिया मानसून की वर्षा प्रारम्भ होते ही करें तथा इसे सितम्बर के अन्त तक जारी रखे।
- कीट की रोकथाम हेतु मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण या क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण का 25 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से एक साथ भुरकाव करे। आवश्यकता होने पर 5– 7 दिवस पश्चात भुरकाव पुनः दोहरावें।

**दीमक**

दीमक का प्रकाप आमतौर पर सभी फसलों में होता है। यह फसलों को बुआई से लेकर कटाई तक नुकसान पहुंची है। इसका प्रकोप भूमि में कम नमी और अधिक तापमान की स्थिति में तीव्र गति से होता है। दीमक पौधों की जडों तथा भूमि से सटे हुए तने के भाग को खोखला कर देती है। फल वृक्षों में दीमक प्रमुख रूप से आम, नींबू, अमरूद, नीकू तथा अनार का शत्रु है।

**नियंत्रण**

1. फसल की कटाई के बाद खेत की गहरी जूताई करें एवं खेत में बचे हुए फसल अवशेषों को एक जगह इकठा कर जला देवें।
2. फसलों की समय पर सिचाई करें क्योकि पानी की कमी होने पर पौधे सूख जाते है और दीमक के आक्रमण की संभावना बढ जाती है।
3. नीम की खली का प्रयोग लाभदायक रहता है। क्यांकि इसकी गंध से दीमक दूर भागती है।

4. खेतों मे अच्छी तरह सडी गली गोबर की खाद का प्रयोग करें क्योंकि गोबर की कच्ची खाद का उपयोग करने से दीमक का प्रकाप बढता है।
5. बुवाई करने से पहले खेत में मिथाईल पैराथियान या क्यूनालफाल 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति है की दर से अंतिम जूताई के समय मिटी में अच्छी तरह मिला दवें
6. खडी फसल में दीमक की रोकथाम के लिए चार लीटर क्लोरपाईरीफॉस 20 ई.सी. प्रति है. की दर से सिंचाई के साथ दें।
7. फल के वृक्षों के तने के पास जमीन मे मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत 25 से 50 ग्राम मिलाकर देवें ।

**सफेद लट**

खरीफ की फसलों मे मुख्यत हल्की बालू मिटी वाले क्षेत्रों में सफेद लट सबसे बडी दुश्मन है इस कीट की पौढ व लट दोनों ही अवस्थाएं नुकसान पहुचाती है लट अवस्था जमीन में रहकर जीवित पौधों की जडों को खाती है। जबकि पौढ अवस्था पैडों की पत्तियों को खाती है। छोटी छोटी लटे अण्डों से निकलते ही पौधों की जडों को खाना शुरू कर देती है जिससे पौधा पीला पड जाता है। बढवार रूक जाती है। एवं अंत में पौधा मर जाता है। लटों की तरह इनके भृंग भी सर्वाहारी होते है। तथा ये अनेक पेडो की पत्तिों को खाकर नुकसान पहुंचाता है कीट द्वारा फसलों में लट एवं पेड पौधों में भृंग द्वारा नुकसान होता है।

**प्रौढ कीट का नियंत्रण**

1. सफेद लट के परपोषी वृक्षों का चुनाव आसपास के वृक्षों के समूह में से करें जैसे– नीम, बेर, खेजडी, अमरूद एवं गुलर आदि
2. जहां भृंगों को परपोषी वृक्षों से रात में पकडने की सूविधा हेा उन जगहेां पर भृंग एकत्रित कर 5 प्रतिशत केरोसिन मिले पानी में डालकर नष्ट करें।
3. भृंग प्रकाश के प्रति आकर्षित होते है। अत इन्हे प्रकाशपाश पर आकर्षित कर एकत्रित कर मिट्टी के तेल मिले पानी में डालकर नष्ट करें।
4. परपोषी वृक्षों में चिन्हीत वृक्षों पर फेरोमोन स्पंज शाम के समय लगावें भृंग 15–20 मीटर की दूरी से फेरोमोन की तरफ आकर्षित होते है। अतः प्रति हैक्टेयर 3–4 परपोषी वृक्षों पर ही फेरोमान स्पंल लगावें व उन्हीं पर ही कीटनाशी रसायनों का छिडकाव करें।
5. मानसून की शुरूआत के साथ ही भृंग खेतों में व खेतों के आस पास लगे खेजडी बेर नी मअमरूद एवं आम आदि पेडों पर इकट्टे होते है इसलिये इन पेडों पर मानसून की शुरूआत होते ही दिन के समय मोनोक्रोटोफास 36 प्रतिशत एसएल 25 मिली या क्यूनोलफास 25 इसी 36 मिली या कार्बेरिल 50 प्रतिशत धुलनशील चूर्ण 72 ग्राम एक पीपे पानी में मिलकार छिडकाव करे।

**लटों वाली अवस्था में नियंत्रण**

खरीफ की विभिन्न सिंचित व असिंचित फसलों व बुआई के समयानुसार लट नियंण के उपया अलग अलग होते है।

**वर्षा के साथ बोई जाने वाली फसलों में लट नियंत्रण**

बीज उपचार – मूंगफली के 80 किलो बीज को 2 लीटर क्लोरपाईरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. या क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.स. या इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 प्रशित एस.एल. 140 मिली से उपचारित कर बोंयें।

बाजरे के एक किलों बीज में 3 किलोग्राम कार्बोक्यूरॉन 3 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 5 प्रतिशत कण मिलाकर बुआई करे।

भूमि उपचार – सफेद लट प्रभावित क्षेत्रों में फोरेट 10 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 5 प्रतिशत या कार्बोफ्यूरोन 3 प्रतिशत कण 25 किलो प्रति हैक्टेयर बुवाई से पूर्व हल द्वारा कतारों में उर दें तथा इन्ही कतारों पर बुवाई करें।

**अग्रिम बोई गई खडी फसल में उपचार**

सफेद लट नियंत्रण हेतु 4 क्लोरपाईरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. प्रति हैक्टेयर की दर से सिंचाई के पानी के साथ देना चाहिए। यह उपचार मानसून की वर्षा के 21 दिन बाद भृंगों की संख्या के आधार पर करें।